

मैथिली चित्र कथा



i hfr Bkdj



क्रम

मोती दाइ 1	दीना भदरी 21
राजा सलहेस 5	जालिम सिंह 29
बोधि कायस्थ 8	नैका बनजारा 35
बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल 11	रघुनी मरड़ 38
अमता घरेन 17	विद्यापतिक आयु अवसान 46

1st Edition 2009 of Maithili Chitrakatha (Maithili Language)
by Preety Thakur narrated by Gajendra Thakur
and Published by Shruti Publication,
8/21, Ground Floor, New Rajendra Nagar, New Delhi-110008
Tel.: 011-25889656, 25889658 | Fax: 011-25889657

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means-photographic, electronic or mechanical including photocopying, recording, taping or information storage-without the prior permission in writing of the copyright owner or as expressly permitted by law. You must not circulate this book in any other binding or cover and you must impose this same condition on any acquirer.

Copyright © Shruti Publication 2009

ISBN: 978-93-80538-13-6

Price: Rs. 100/- (INR)-for individual buyers
US \$ 80 for libraries/institutions (India & abroad)

Jfir i d k'ku

jftLVMZ v k m i 01 % 8@21 H k r y] U; w j k t b n z u x j] u b z f n Y y h & 110008

n j i H k k " k % 011&25889656&58 i 001 % 011&25889657

website://www.shruti-publication.com

email: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed by Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor:

Ajay Arts, 4393/4A, 1st Floor, Ansari Road, Darya Ganj,
New Delhi 110 002 (INDIA) Tel. : 011-23288341, 09968170107

Bihar & Nepal: Dr. Umesh Mandal Mob: 09931654742

मोती दाइ

गाम उजैनी। गहिल माताक भगतिन मोती दाइ। मोती दाइ जातिक रजक।



एक दिनक गप, बाड़ीमे गोबर पाथि रहल छलीह मोती दाइ।



गुअरटोलीक जनानी सभ हुनका देखि कऽ बाजल.....



मोती दाइ दुःखसँ भरि गेलीह। गहिल माताक गहमर गेलीह, पीड़ी खोदऽ लगलीह।



गहिल माता प्रगट भेलीह। मोती दाइ बच्चा माँगलन्हि।

ठीक छै।
हम इन्द्रक
दरबार जाएब आ
अहाँ लेल बच्चा
माँगब।



इन्द्रक दरबार। गहिल माता अपन भगतिन लेल बच्चा माँगलन्हि । इन्द्र हिसाब लगेलन्हि।



पूर्व जन्मक
फल छै।
ओकरा बच्चा नहि
लिखल छै।

मोती दाइकेँ बच्चा
दियौ इन्द्र।

गहिल माता घुरलीह मुदा एम्हर मोती दाइ चिता सजेलन्हि, मरबाले तैयार।



गहिल माता फेर इन्द्र लग गेलीह ।



ठीक छै।
ओकरा बच्चा तँ
हेतैक मुदा ओ
छठियारी दिन मरि
जएतैक।

ओकरा बच्चा देबैए
पड़त इन्द्र, नहि तँ
ओ मरि जाएत।

सएह भेल। मोती दाइकेँ बच्चा भेलै।



मुदा ओ छठियारी दिन मरि गेलैक ।



मुदा बाँझ होएबाक दुःख खतम भेलै मोती दाइक। गहिल माताक भगता ओ खेलाए लगलीह।



राजा सलहेस

राजा सलहेस दूधवंशी जातिक छलाह, जमीन्दार
नौरंगी बहादुर थापाक अहिठाम काज करैत छलाह।

दबना, राजाक मालिन, ओकरासँ
प्रेम करैत छलि।



नौरंगी बहादुर
थापाकेँ क्यो
सलहेसक
विरूद्ध कान
भरि देलकन्हि।



दबना चिन्तित। ओ राजासँ कहि कऽ चूहड़मलकेँ हटबा देलन्हि।

आ सलहेस बनि गेलाह राजाक महलक पहरेदारक सरदार।



आब सलहेस सेहो प्रेम करए लागल दवनासँ।

मुदा चूहड़मल षडयंत्र केलक।



रानीक महलसँ नौलखा हार चोरा लेलक।



आ सलहेसक घरमे
राखि आएल।

राजा पुछाड़ी करबेलन्हि। चूहड़मल कान भरलक। सलहेसक
घरक तलाशीक आदेश भेल।



सलहेसकें पकड़ि लेल गेल।

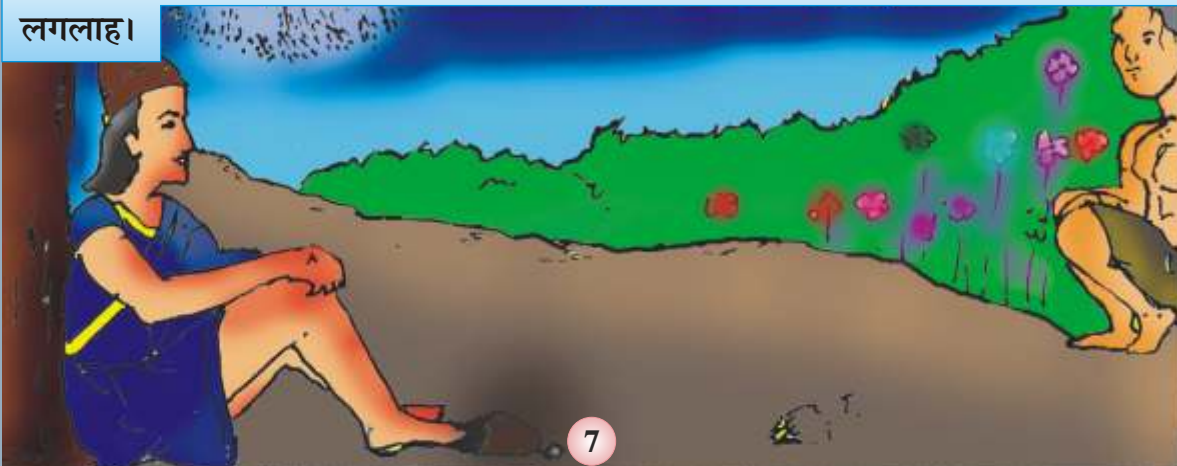


दवना तन्त्र विद्या करत।

चूहड़मल खून बोकड़ैत दवनाक पाएपर खसल



राजा सलहेस फेरसँ बहाल भऽ गेलाह। दवना आ सलहेस विवाहित भऽ खुशीसँ रहए लगलाह।



बोधि-कायस्थ

मिथिला राजदरबारमे बोधि कायस्थ। बड्ड सज्जन। नजि मोनसँ, वचनसँ आ नहिये कर्मसँ ककरो अहित कएने छलाह।



दान-दक्षिणा से खूब दैत छलाह।



भोलाबाबाक बड़का पुजेगरी छलाह बोधि कायस्थ।



फेर आस्ते-आस्ते ओ वृद्ध भेलाह आ एक दिन बिछौनपर करोट लैत हुनका विचार अएलन्हि-

हम कहियो ककरो अपकार
नहि कएलहुँ से पुराण
वचनक अनुरूप गंगा हमर
बाट जोहैत होएतीह। से
कनेक गंगा मैयाक सेहो
परीक्षण करी।



बिदा भेलाह बोधि कायस्थ। घरबार छोड़ि गंगा मैयाक शरणमे।



गंगा मैया आधकोस दूर रहथिन तखने बोधि कायस्थ ठाढ़ भऽ गेलाह आ गंगा मैयासँ कहलखिन्ह....



हे गंगे । जे हम ककरो अपकार
मन, वचन वा कर्मसँ नजि केँने
होइए तँ अहाँ आबि कऽ हमरा
पवित्र करू।

गंगा ई सुनि बिदा भेलीह अपन भक्त लग। बोन-झाँखुरकें तड़पैत बोधि लग पहुँचि गेलीह।
बोधिकें पवित्र कऽ अपनामे समेटि लेलन्हि। स्वर्ग गेलाह बोधि।



विद्यापति ई कथा पुरुषपरीक्षामे लिखलन्हि आ बादमे विद्यापतिक गंगालाभ सेहो अही
तरहें भेलन्हि।

बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

बहुरा गोढ़िन बेगूसराय लग बखरीक रहैबाली आ दुलरा दयाल भरौड़क राजकुमार। दुनू गोटे तंत्रक साधक आ नृत्यमे पटु। पतिक बलि दऽ कऽ तंत्र सिखने छल बहुरा। से लोक दुलरा दयालकेँ नटुआ दयाल कहए लगलाह।



नटुआ दयाल एहि क्रममे बहुरा गोढ़िन लग जाए लागल आ ओकर पुत्री फूलमतीसँ प्रेम करए लागल। विवाहक प्रस्ताव राखलक नटुआ दयाल आ से मानए पड़लै बहुराकेँ।



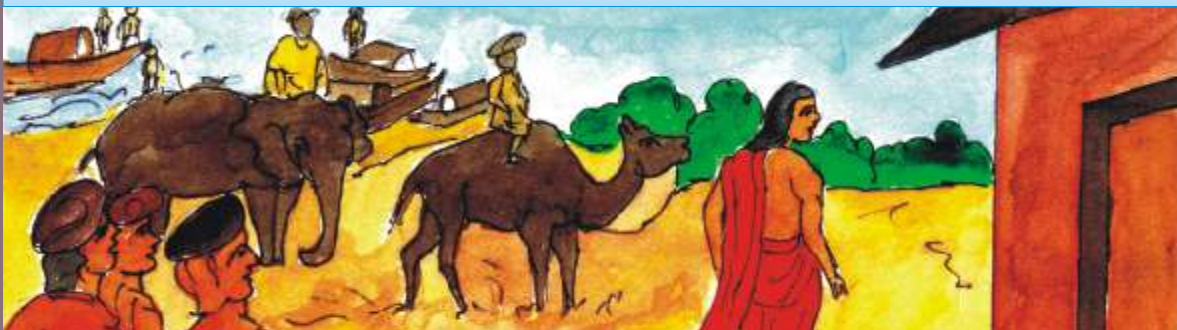
नटुआ दयालक गुरु मंगल कमला कातमे रहैत छलाह। हुनकासँ आशीर्वाद लेलक नटुआ दयाल।



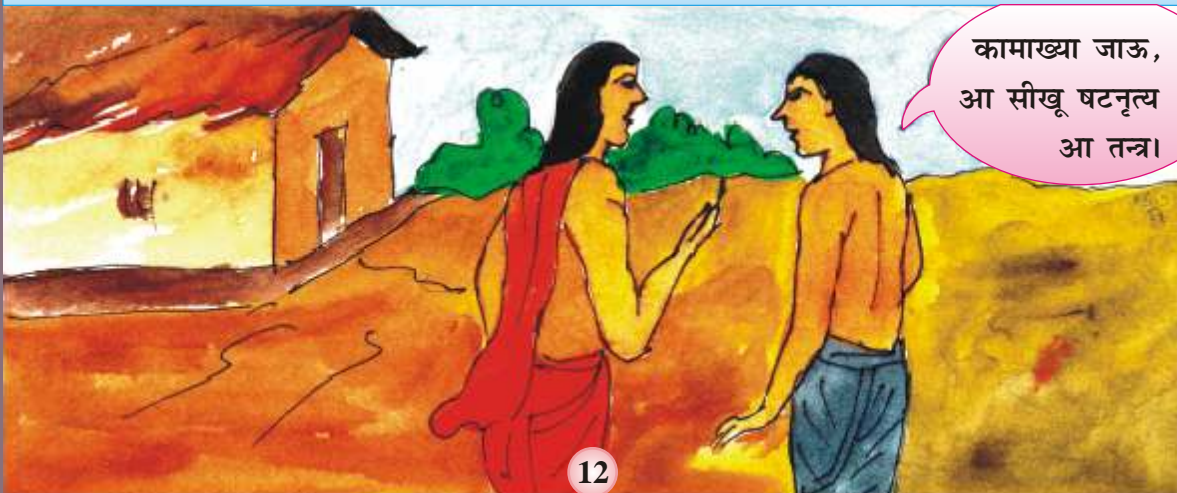
आ बिदा भेल बियाह करबाक लेल।



पाछाँसँ जे बरियाती सभ अएलैक तकर झगड़ा घरबारीसँ भऽ गेलै। आब लिअ। नटुआ दयालक मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी निकालि लेलक बहुरा। बराती सभकेँ बकड़ी बना कऽ घरमे कोँचि देलक बहुरा।



घुरि कऽ गुरु मंगल लग गेलाह नटुआ दयाल। सभ गप सुनेलन्हि।



कामाख्या जाऊ,
आ सीखू षटनृत्य
आ तन्त्र।

कामाख्याक चंडिका मन्दिरक नर्तकी योगिनीसँ सिखलक तन्त्र।



सरैया गामक सिद्धदेवी वागेश्वरीकेँ नरबलि देल जाइ छलै आ ओतए नाचै छली भुवनमोहिनी। अनहद आ आज्ञाचक्र नृत्य तँ सिखबे केलक नटुआ दयाल, कारी जादू काटैक मंत्र सेहो सीखि लेलक।



कमला-बलानक धारमे उतरि गेल नटुआ दयाल। मुदा बहुरा सेहो नटितन, अपन षट्चक्रसँ सुखा देलक धारक पानिकेँ।



लोक सभ राजा लग गेलाह। सभटा गप सुनेलन्हि।



बहुराक कएल ई अछि वा नहि
तइ लेल हम दूत पठबै छी।
तावत एहि आफदसँ मुक्ति लेल
यज्ञ सेहो कएल जाएत।

यज्ञ शुरू भेल।

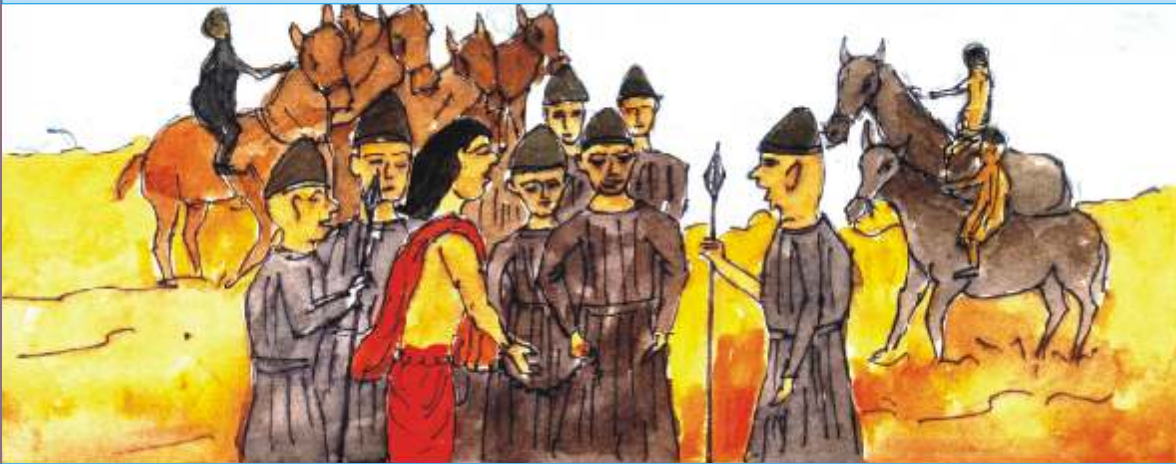


आ ओम्हर सिपाही सभ बहुरा लग पहुँचल आ ओकरा पकड़ि कऽ राजा लग आनलक।



हमरा अनेरे पकड़ि कऽ
अनबेलहुँ महाराज। ई तँ
भरौड़क राजकुमार दुलरा
दयालक काज
अछि।

राजाक आदेशसँ सिपाही सभ दुलरा दयालकें ताकि कऽ पकड़ि लेलक।



राजाक सोझाँ आनल गेल नटुआ दयाल।

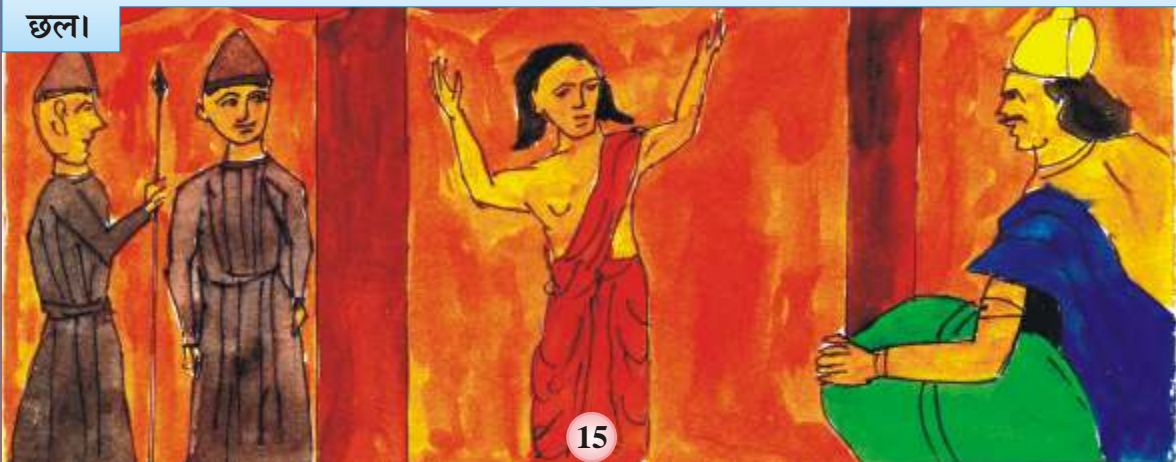


तखन एहि
प्रलयसँ
बचबाक
की उपाए।

राजन। ई सभ बहुराक काज छी। ओकर बेटी फूलमतीसँ हम
बियाह करऽ गेलहुँ, मुदा ओ बरियाती सभकें बकड़ी बना देलक।

हमर मंत्री मल्लक एक
आँखिक रोशनी
निकालि लेलक।
तकर काट लेल हम
कामाख्यासँ षटनृत्य
सीखि कऽ आएलहुँ तँ
आब ओ ई षडयन्त्र
कएलक अछि।

आ उपाए कएलक नटुआ दयाल। अपन नृत्यसँ जे कामाख्यासँ सीखि कऽ ओ आएल
छल।



बहुरा धन्य भऽ गेली।



कमलाधारक पूजा केलक
नटुआ दयाल।

मुदा बहुरासँ विद्रोह कऽ देलक बहुराक किछु चेला आ
मारि देलक चक्कू नटुआ दयालकै।



मुदा कामाख्याक योगिनी जिया देलक नटुआ दयालकै आ शुरू कऽ देलक खतम केनाइ
बहुराक विद्रोही शिष्य सभकै।

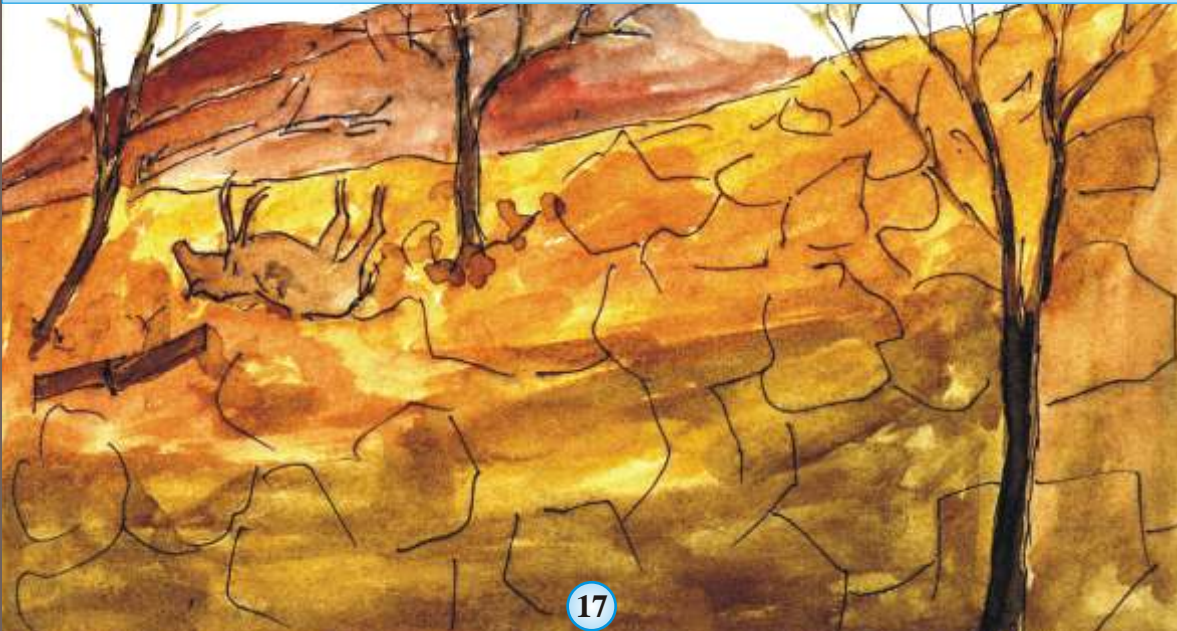


अमता घरेन

मिथिलामे राजा माधव सिंहक राज्यमे सभ ठाम हरियरी पसरल रहैत छल।



मुदा भयंकर रौदी भेल। सभटा हरियरी खतम।



राजा यज्ञ करबेलन्हि, मुदा कोनो फाएदा नहि।

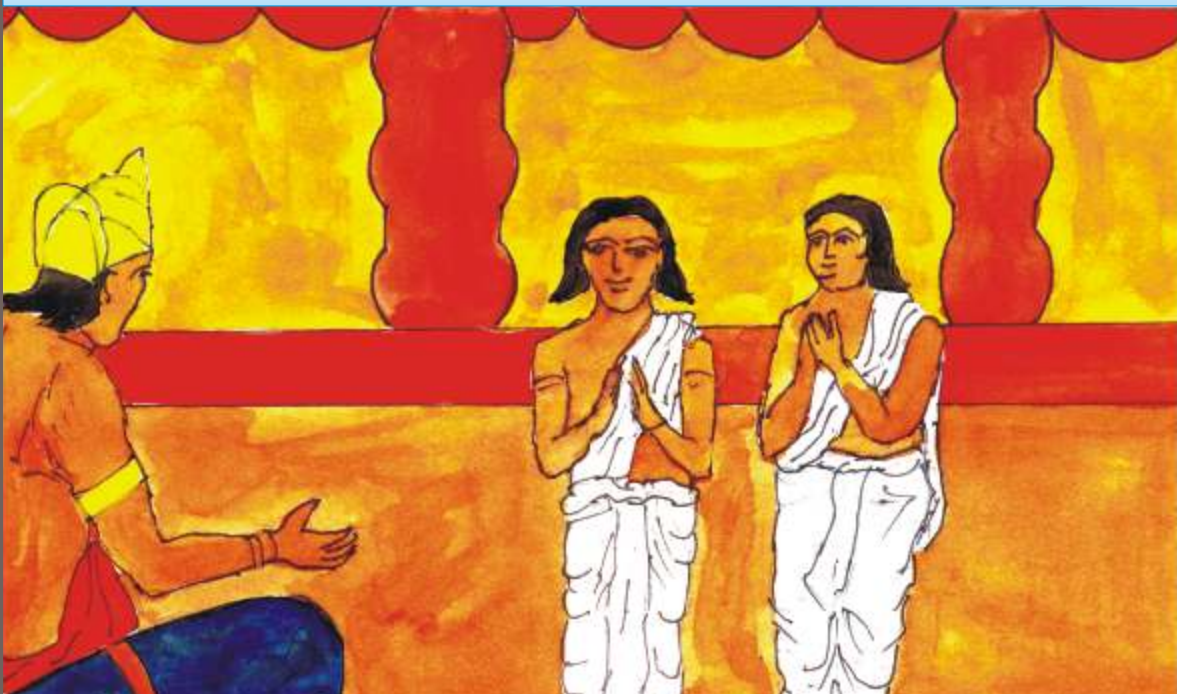


राजा बड्ड दुखी रहथि। मुदा तखने एकटा दरबारी कहलकन्हि-

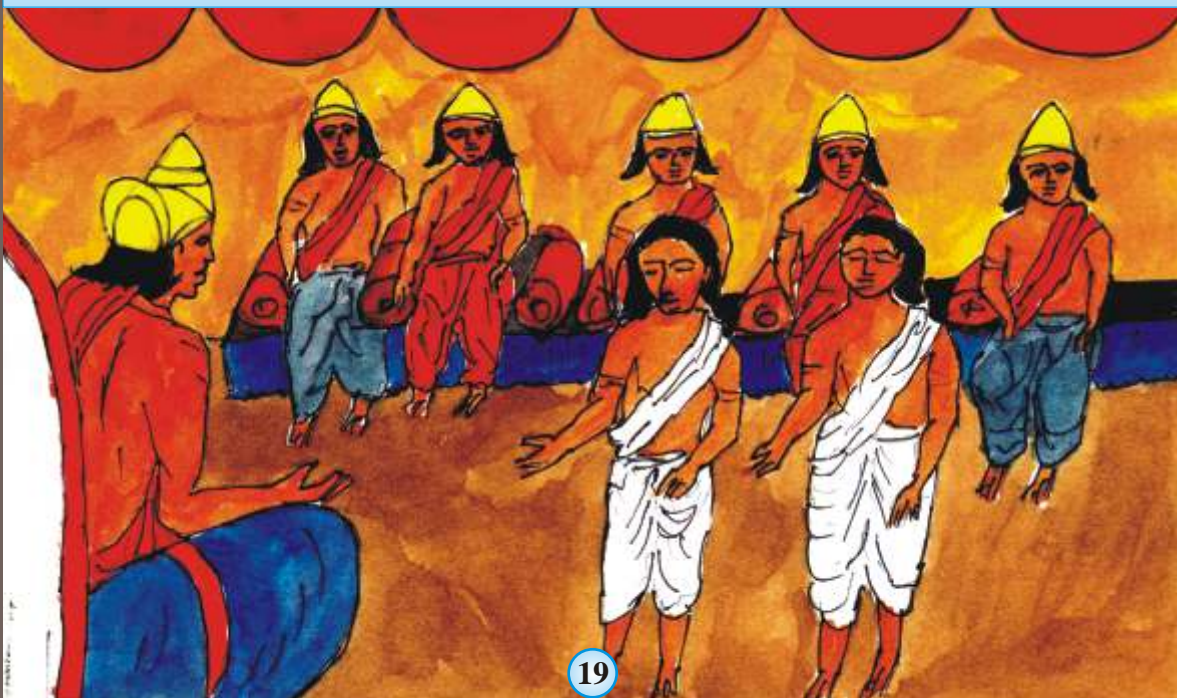


महाराज। नेपाल नरेशक
दरबारमे रामनवाज, सीताराम,
राधाकृष्ण आ करताराम चारि
भाइ बड्ड पैघ गबैया छथि।
वएह अपन राज्यमे बरखा
करबा सकैत छथि। ध्रुवपदक
पैघ गाएक सभ छथि।

माधव सिंहक अनुरोधपर नेपाल नरेश राधाकृष्ण आ करतारामकें पठा देलखिन्ह।



भीम मल्लिकक पखाबजक थापपर राधाकृष्ण आ करताराम राग मेघ मल्हार शुरू केलन्हि।



आ एम्हर बरखा जे शुरू भेल से खतम होएबाक नामे नजि लैत छल।



लागल जे आब जल-प्रलय आबि जाएत।

आब स्वर-लहरीकें
विराम दियौ। नजि
तँ राज्यमे हाहाकार
मचि जाएत।

ठीक छै
महराज।



बोन लग राजा खीरीक गाछ लगबा कऽ अमता गाम बनेलन्हि आ राधाकृष्ण करतारामकें
दऽ देलन्हि। ओतहि ओ सभ कुटी बना कऽ संगीत साधना करए लगलाह आ हुनकर
वंशज संगीतक अमता घरेनक नामसँ प्रसिद्ध भेल जाहिमे आजुक रामचतुर मल्लिक सेहो
छथि।



दीना-भदरी

नेपालक मिथिलांचलमे अछि जोगियानगर जतए रहै छला दू भाइ-दीना आ भदरी। मुसहर जातिक रहथि आ पाँच-पाँच मोनक कोदारिसँ बिगहा भरि खेत दिन भरिमे तामि लैत छलाह। बड़ नीक खेती करथि।



जोगियानगरक बगलमे जाँजर गाम छल। ओतुक्का जमीन्दार छल कनक सिंह आ ओकर पत्नी रहए बुधनी। बड़ बदमाश दुनु गोटे। बोनिहारकेँ देखए नहि चाहए।



कनकसिंहकेँ दीना-भदरीक विषएमे पता चललै। ओ जोगियानगर गेल आ दीना-भदरीसँ कहलक.....

तू दुनु गोटे हमर
खेतमे काज कर!
चलै चल हमर
गाम जाँजर।



दीना-भदरीकें कनक सिंहक बोनिहारसँ कएल जा रहल अत्याचार बुझल रहै।
मारि-मारि कऽ छुटलाह दुनू गोटे कनक सिंहपर। भागल कनक सिंह।



बुधनीकें पता चललै।

ओ सलहेस थान गेल। कठोर तपस्या केलक।



सलहेस प्रकट भेलाह.....



सलहेस वचनक हारल की करताह? रातिमे दीना-भदरीकेँ सपना देलन्हि सलहेस।



रातिमे बिदा भेलाह दुनू गोटे, तीर-धनुष लेने। संगमे मामा बहुरन। रस्तामे नंगड़गोड़िया गाम, ओतए दोस जीतन यादवकेँ सेहो नोति पहुँचलाह कटैया बोन।



अमावस्याक राति, अन्हार गुज्ज। मुदा शिकार एकोटा नहि। बादुर घुमैत। दीना एसगरे जंगलक बीचमे चलि गेलाह। ओतए सलहेसक संग बुधनी ठाढ़ि।

सलहेस!
अहाँ
अपन
खुनीमा
बाघ
बजाउ



बुधनीक कहलापर सलहेस अपन खुनीमा बाघ बजेलन्हि। दीना बाण चलेलन्हि मुदा बाण रस्ता बिसरि गेल ।



फेर मल्लयुद्ध भेल आ दीना बाघकेँ मारि देलन्हि।



मुदा फेर बुधनीक कहलापर बाघिनकेँ बजेलन्हि सलहेस। ओ बगरा बनि आएलि। अपन बिखाह चांगुरसँ पहिने दीनाकेँ, फेर ओकरा ताकए आएल भदरीकेँ मारि देलक।



दीना आ भदरीक आत्मा दू गोटेक शरीरमे पैसि गेल।



भेष बदलि दुनू पहुँचल माए निरसो लगा।



अहाँक बेटा
मारल गेल ।
श्राद्ध करू
ओकर।

मुदा निरसो लग पाइ नहि। दीना-भदरी ओकरा सपना देलन्हि।



घरमे तूर अछि। बनीमा लग जाऊ।
एक पट्टापर तूर राखू आ दोसरपर
बनीमाकेँ समान जोखैले कहियौ।
जतेक मोन हुआए ततेक सामग्री
उठा कऽ लऽ आऊ।

A colorful illustration of a group of people in a room with orange walls. A man in a red shirt and blue shorts is bending over a large bowl on the floor. A man in a yellow shirt and red shorts stands behind him, holding a bowl. Several other people are sitting on the floor, some with bowls of food. A window with a red flower is visible on the wall.

નિરસોકેં હંસા ઈ ગપ્પ કહલનિહિ-મુદા ઓ કિએક માનતીહ.....

તખન અપન છાતી
સાત તહ કપડાસં
બાનિ લિઅ આ
ઓકરા લગ ચલૂ
જે દીના બનિ
ગેલ છલ।

જકર હમ શ્રાદ્ધ
કાલહું સે
જીવિત.....



સાહે કલનિહિ નિરસો । દૂધ બહિ દીના-ભદરીક મુંહમે ગેલ આ દુનૂ ગોટે બિલા ગેલાહ।



फेर बिदा भेलाह दीना भदरी मोरंगा। जोरावर सिंह, ताहिर आ सुनरिया लगा कऽ डेढ़ सए दुष्टक नाश केलन्हि। फेर धारक कातमे मारलन्हि बुधनीकें।



फेर सलहेस अएलाह आ कहलन्हि.....

जतए-जतए हमर
पूजा हएत,
ततए-ततए अहाँक
पूजा सेहो हएत।



सलहेस आ दीना-भदरीक गहमर संगे-संग रहए लागल। फेर दीना-भदरीकें मुक्ति भेटि गेलन्हि। परलोकमे सलहेस आ दीना-भदरी संगे-संगे रहए लगलाह।

जालिम सिंह

बेतिया राज। वीर जालिम सिंह। राजपूत जातिक, राजाक सिपहसालार। कतौ जाइत रहथि आकि पियास लगलन्हि।



क्यो पानि पिआयब हमरा।

ओहिमे एकटा छलीह मुँगा। जातिक दुसाध।



हमर हाथक पानि
पीने अपवित्र भऽ
जाएब अहाँ।

वर्ण-व्यवस्था
बनेनिहारकेँ हम नजि
मानैत छी।

मुँगा पानिक बासन जालिमक हाथमे दऽ घर चल अएलीह।



लिअ। ई पानिक
बासन छोड़ि आबि
गेल छलीह।

फेर शुरू भेल प्रेमकथा मुँगा आ जालिम सिंहक।



मुदा पृथ्वीपाल सिंह, जे राजाक चमचा छल, ओकरा ई पसिन्न नहि। से एक दिन जखन मुँगा आ जालिमक भेंट भऽ रहल छल, ओ आक्रमण करबा देलक।



मुदा जालिमसँ डरि सभ भागि गेलाह। जालिमक संगी पटटू मलाह सभ आक्रमणकारीक पता लगा कऽ मारि देलन्हि।



बेतिया राजाक दरबारमे पृथ्वीपाल सिंह जालिमक विरूद्ध अरजी लगेल्क।



दरबारमे आएल जालिम।



राजा छोड़ि देलन्हि जालिमकेँ। पट्टू मलाहसँ भेंट केलन्हि जालिम। विचार भेलन्हि जे मौनी बाबासँ विचारी।



पट्टू, जालिम आ मौनी बाबामे भेंट भेल।



पट्टूक हाथें पृथ्वीपाल मारल गेल तँ एम्हर मूँगाक जीनाइ मुश्किल भऽ गेल।



मुदा ई खबरि जालिमकें भेटलैक तँ ओ पहुँचि गेल मूँगाक घर। पुछलक मूँगाक पता तँ मूँगाक भौजी डरक द्वारे पता बता देलक।



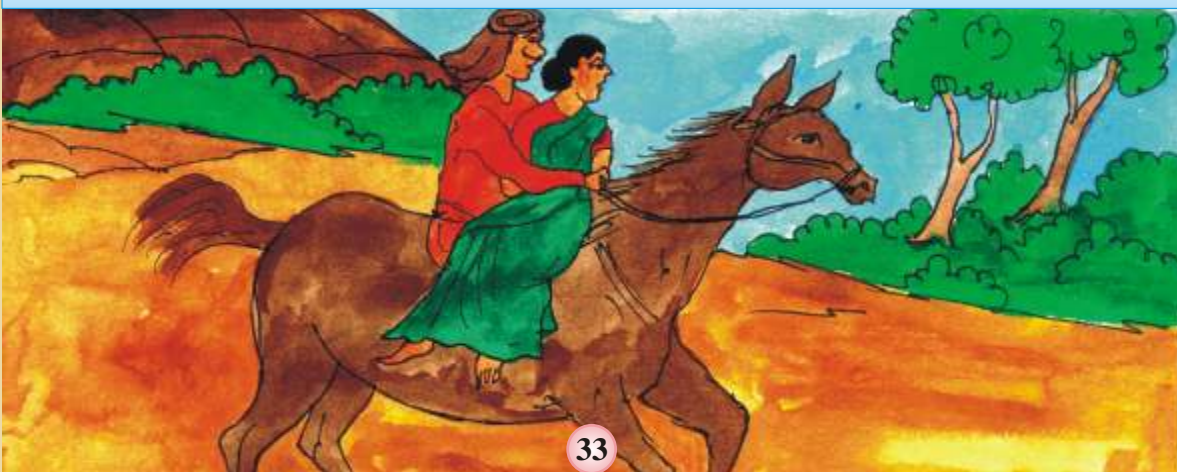
कनुआक ठेकानापर पहुँचल जालिम। मूँगाक आइ बलि देमए बला छल कनुआ। युद्ध भेल। कनुआ आ ओकर महीसकेँ मारि देलक जालिम।



माताक मन्दिरमे बियाह भेल। मूँगा आ जालिमक बियाह।



मूँगाकेँ लऽ घर बिदा भेल जालिम सिंह।



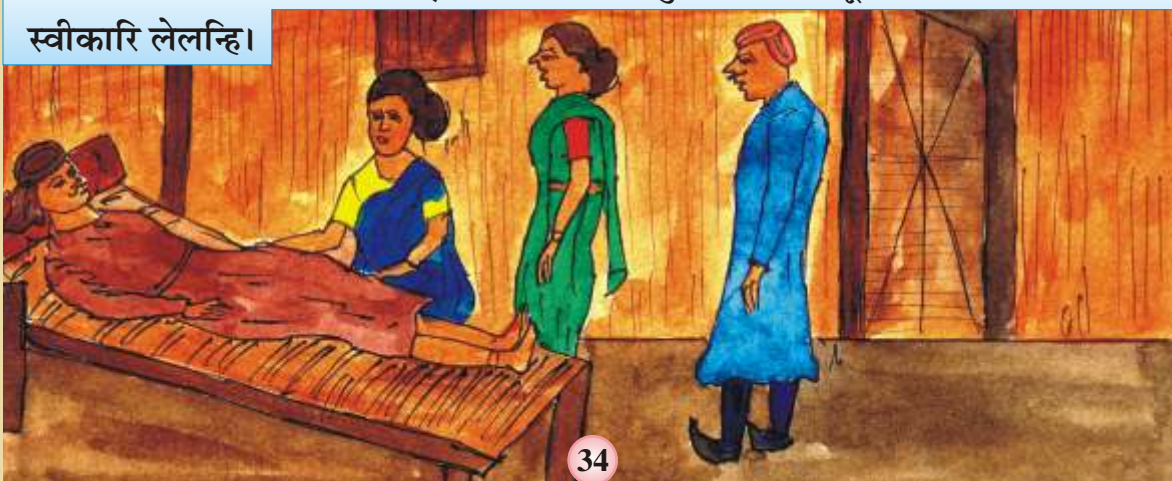
પહિને જાલિમ કહિ દેલનિહિ જે ક્ષત્રાણી અછિ મૂંગા। મુદા જખન હુનકર ભાએ સભકે પતા
ચલલનિહિ તં મારિ બજડલ। ઘાએલ ભડ ગેલાહ જાલિમ।



ઘાએલ પતિકે ઘોડાપર લડ બિદા ભેલીહ મૂંગા।



વૈદ્યક ઘરમે ઉપચાર ભેલ। ભાએ સભક આંખિ ખુજલનિહિ આ મૂંગા-જાલિમકે ઓ સભ
સ્વીકારિ લેલનિહિ।



नैका बनिजारा

शोभानायक एकटा
वणिाक रहथि,
तिरहुतमे बारी नाम्ना
स्त्रीसँ हुनकर बियाह
भेल छलन्हि। बियाहक
बाद बिध भेल आ
शोभानायक मोरंग
बिदा भऽ गेलाह। मुदा
रस्तामे डकहरक ई गप



सुनलापर जे ओहि राति जे पत्नीक संग रहत तकरा चन्सगर पुत्रक प्राप्ति होएतैक, ओ
घुरि कऽ पत्नी लग आबि गेलाह।

फेर अपन भाए चतुरगनक संग ओ घरक पछुआरमे नाहसँ बिदा भऽ गेलाह मोरंग। बारी
तकैत रहलि।



शोभानायक पत्नी-बच्चाक भविष्य लेल बाबा सभ लग जाइत रहल।



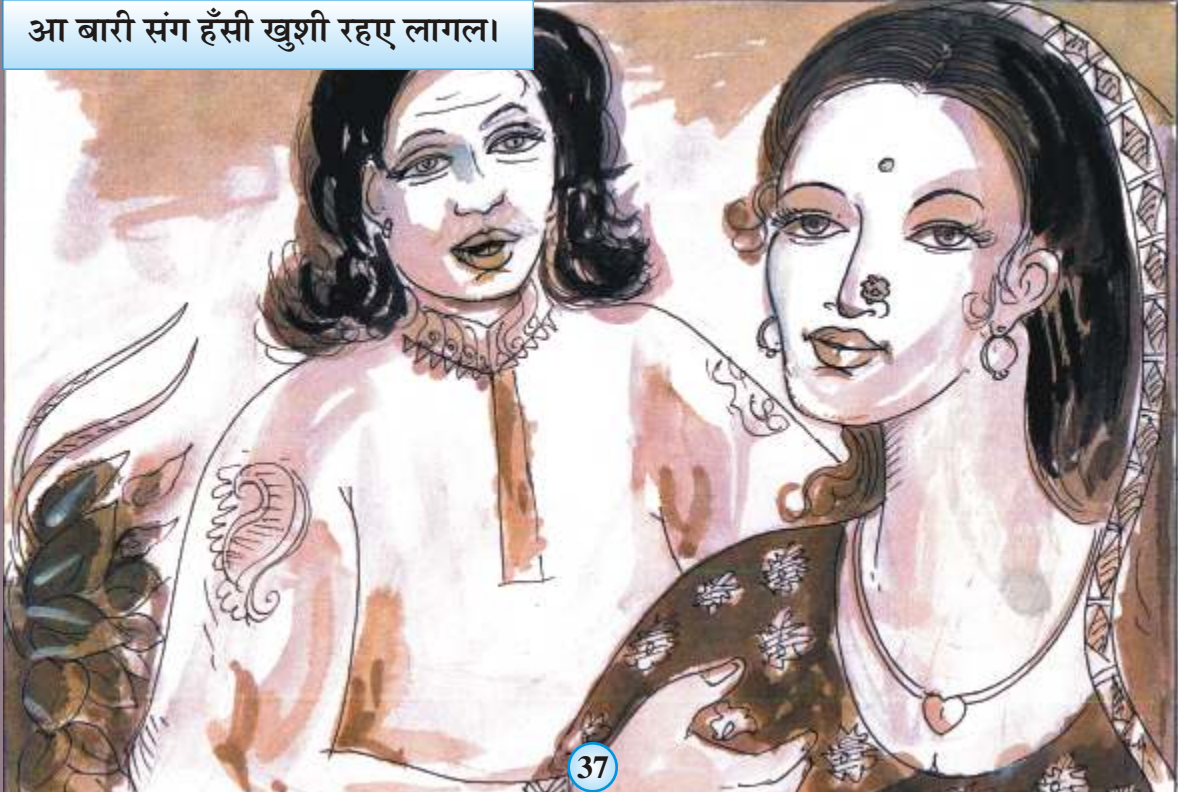
एम्हर बारीपर आरोप लागल। बच्चा पेटेमे
रहै तँ सासु-ससुर ओकरा घरसँ निकालि
देलन्हि। पंचैती भेल। बारी चतुरगण लग
चलि गेलि।





मुदा मोरंगसँ कए बेर घुरए चाहलक नैका
मुदा कखनो प्रकृति संग नजि देलकै, तँ
कखनो किछ आर कारणसँ, बारह बरख
बीति गेलै। तेरहम बरख शोभानायक घुरि
आएल।

आ बारी संग हँसी खुशी रहए लागल।



रघुनी मरड़

गौपालक रघुनी भगवतीक भक्त। ओकरा दूटा भाए, देवदत्त आ काशीराम मरड़। पड़ल अकाल। आ रघुनी आबि गेलाह सहरसा लग बनमां लग, बरहमपुर गाम। ओतुक्का जमीन्दार रहथि युगल प्रसाद। दुखड़ा सुनेलन्हि रघुनी हुनका।

रघुनी। अहाँकें दंगल जितलापर हम कहनहिये रही जे कोनो बेगरता होए तँ कहब। अहाँकें सवा सए बीघा जमीन दऽ रहल छी। खूब मोनसँ खेती करू। बचत होएत तँ मालगुजारी ओहीसँ दिअ।



मोनसँ खेती करऽ लगलाह रघुनी।



बड़का बखारी बना लेलन्हि। सहस्र गाए भऽ गेलन्हि। सुगमा गाममे गौशाला बना रहऽ



लगलाह। मुदा युगल प्रसादक घरमे बखड़ा भेलन्हि, हुनकर सम्पति गागोरीक राजा कीनि लेलक।

रघुनी गाए चरबैत छलाह सुगमा गाममे।



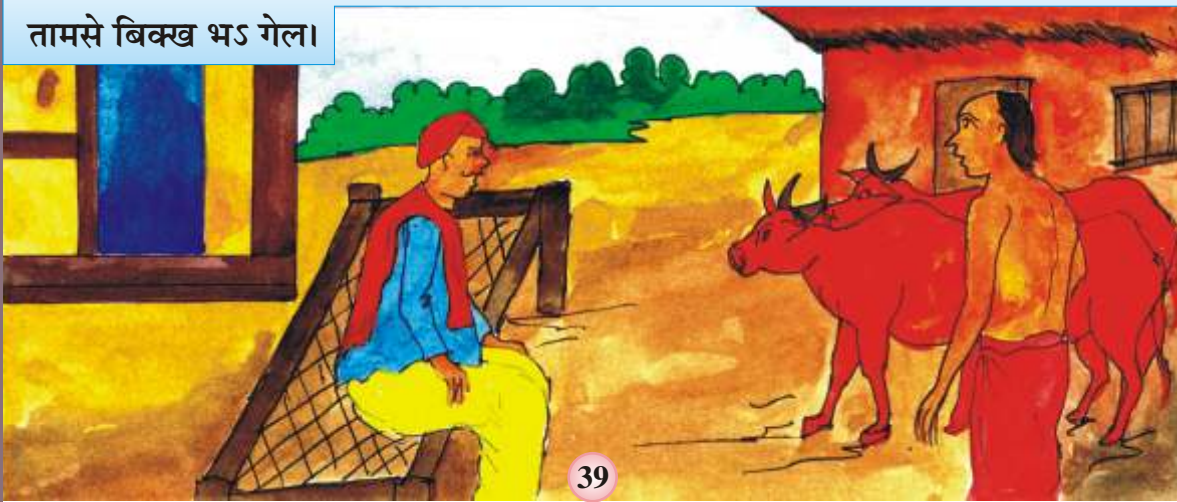
भजार रघुनी। चौधरीक
दलानपर सिमरी गाममे
नाच होएत।

रघुनी गेलाह सिमरी। चौधरी संग बैसि नटुआक नाच देखलन्हि। चौधरी ओकरा औंठी
आ चादरि देलन्हि।



नटुआ, अहाँ हमार
गौशालासँ अपन
पसिन्नक जोड़ा गाए
हाँकि लिअ।

रघुनी चलि गेल। नटुआ जोड़ा गाए लऽ चौधरी लग आएल। चौधरी मोने-मोन रघुनीपर
तामसे बिक्ख भऽ गेल।



चौधरी जोगी मकदूमसँ भेंट केलक।

रघुनी भगवती-भक्त
अछि। हमरा योगी
देवीक आराधना
करए पड़त।

जादूगर जोगी मकदूम।
रघुनीक मृत्यु चाही
हमरा।



एकटंगा आराधनाक आठम दिन शुरू भेल।



योगी देवी चण्डिका प्रगट भेलीह।

देवी, रघुनीक
मृत्यु चाही।

ठीक छै।



एम्हर रघुनीकेँ आकाशमे अबाज सुनबामे अएलैक।

रघुनी। पीपरक पातकेँ तोड़।
दूधक बदलामे जे खून
निकलए तँ बुझू जे कोनो
बिपति आबैबला अछि।

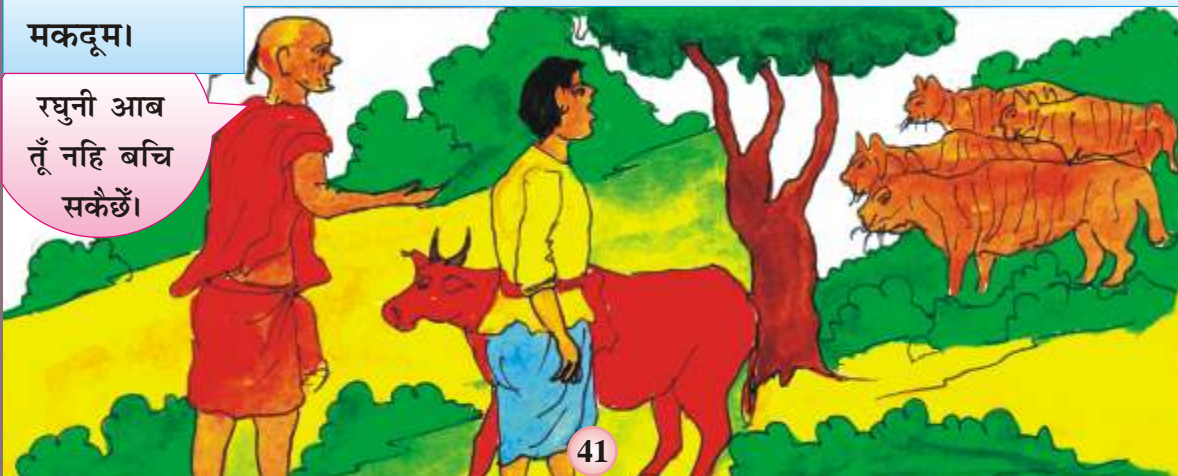


रघुनी पीपड़क पात तोड़लन्हि। ओहिमे सँ दूधक बदला खून निकलल।



तखने सात सए बाघ बाघिन रघुनीक सोझाँ आबि गेल। आ रघुनीक पाछूमे जोगी जादूगर
मकदूमा।

रघुनी आब
तूँ नहि बचि
सकैछै।



बाघ रघुनीकें मारि देलक।



मुदा तखने भेल चमत्कार। रघुनी उठि कऽ बैसि गेल। चण्डिकाक बहिन कामाख्याक भक्त छल रघुनी। वएह जिया देलन्हि रघुनीकें।



चौधरी फेर बजेलक जोगी मकदूमकें। ओ हाथमे सरिसो लऽ कऽ मंत्र पढ़ैबला रहए आकि ओकर मुट्ठी बन्दे रहि गेलै।



रघुनीसँ माफी
माँगू नै तँ ओ
नै छोड़त।

ठी छै। माफी माँगि
कऽ हम एहि बेर
अहाँकें बचा लेब
मुदा तकर बाद हम
ओकर शिकाइत
गागोरी राजासँ कऽ
कऽ ओकरा जहल
दियबा देबै।

रघुनीक पएरपर खसल चौधरी।



मुदा चौधरी रघुनीक पाछाँ लागि गेल। ओकर गलती ताकए लागल।



पहुँचि गेल चौधरी गागोरी राजा लग।



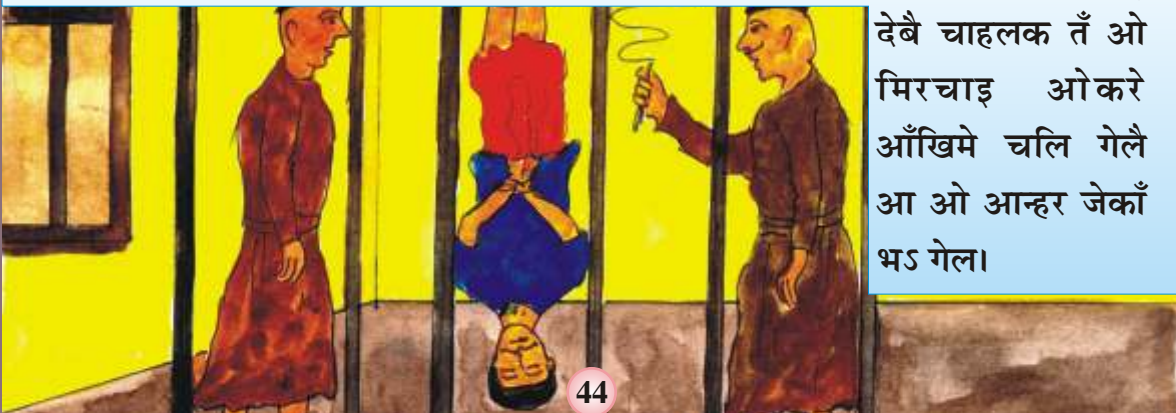
सिपाही आएल। रघुनी नजि भेटलै। ओकर भाए देवदत्त पकड़ा गेल। मुदा जखन सिपाहीक संग देवदत्त केजरीडीह लग छल तँ रघुनीकेँ देखलक देवदत्त। बुझि गेल जे होएत कोनो खेला।



राजा लग आनल गेल देवदत्तकेँ।



मुदा ई की। चोट देवदत्तकेँ नहि मारनिहारकेँ लागै। ओकर गड़ामे जिंजीर कियो देबए चाहलक तँ जिंजीर ओकरे गरदनिमे लागि गेलै। भनसिया देवदत्तक आँखिमे मिरचाइ



राजा लग सभसँ बूढ़ सेवककेँ पठाओल गेल।

ब्राह्मिमाम। सरकार
ई रघुनीक
चमत्कार अछि।
देवदत्तक कहल
आब करए पड़त।
हम सभ जे करै
छी तकर उनटा
भऽ रहल अछि।



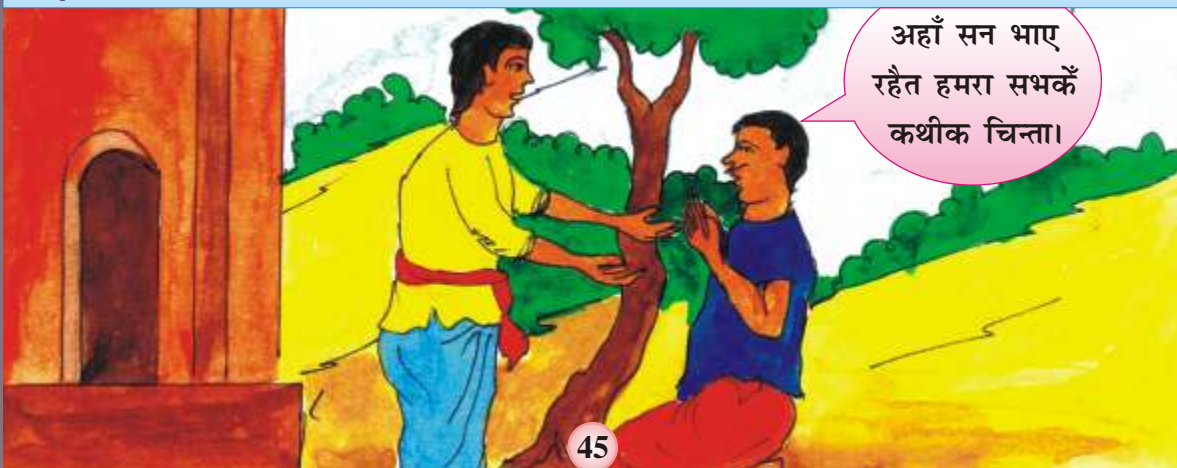
राजा पहुँचलाह जहल। देवदत्तकेँ कहलन्हि, गलती भेल, कहू की करी हमरा सभ। अहाँ जहलसँ जा सकै छी।

महाराजाधिराज। हम तखने
जहलसँ जाएब जखन अहाँ
सभक सभटा बकियौता
मालगुजारी माफ कऽ देबै।
मालगुजारी नजि देबैबला
जहलमे बन सभ रैयतकेँ
छोड़ि देबै आ रघुनीसँ
माफी माँगबै।



अहाँक सभटा गप
हम मानि रहल
छी।

रघुनीसँ भेंट भेलै देवदत्तकेँ।



अहाँ सन भाए
रहैत हमरा सभकेँ
कथीक चिन्ता।

विद्यापतिक आयु अवसान

विद्यापति राजा शिव सिंहक दरबारमे छलाह। शिव सिंहसँ दूर भेलाक बाद ओ भक्तिभावमे लीन भऽ गेलाह।



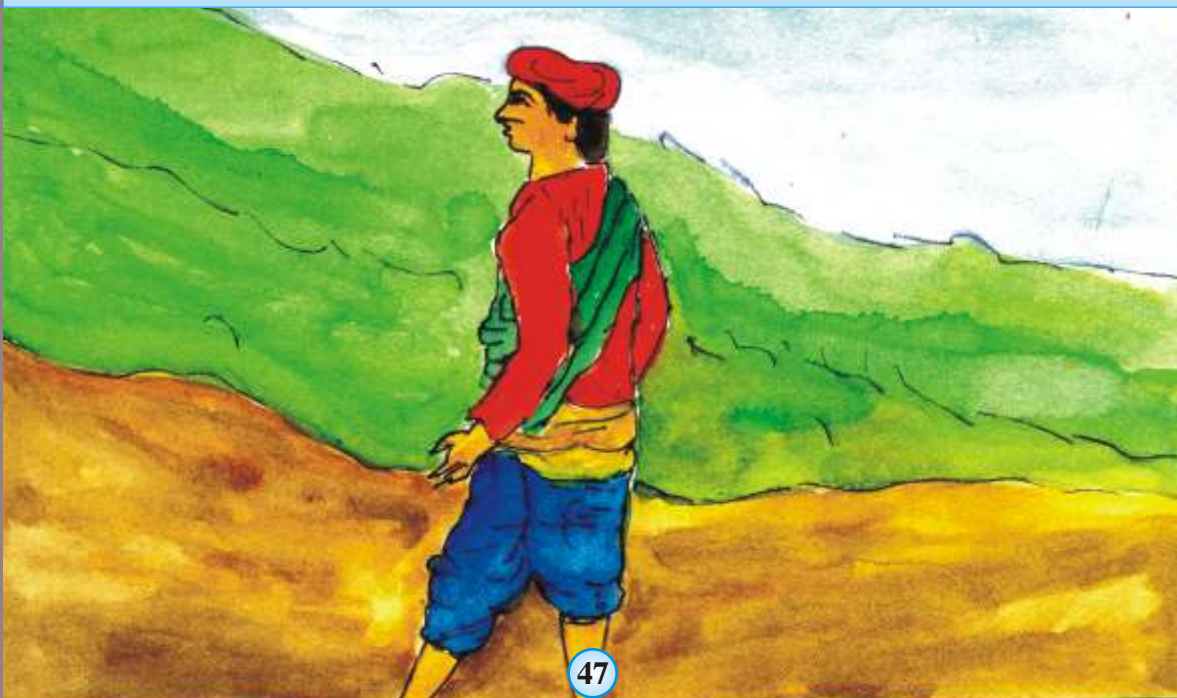
बत्तीस बरख बीति गेल। शिव सिंह सपनामे एलखिन्ह। मैल भेषमे कान्तिहीन काया।



विद्यापति बुझि गेलाह जे हुनकर मृत्यु लग आबि गेल छन्हि। से अपन संतति आ लगक लोककेँ बुझा-सुझा कऽ गंगालाभ करबाक अपन निर्णय सुनेलन्हि।



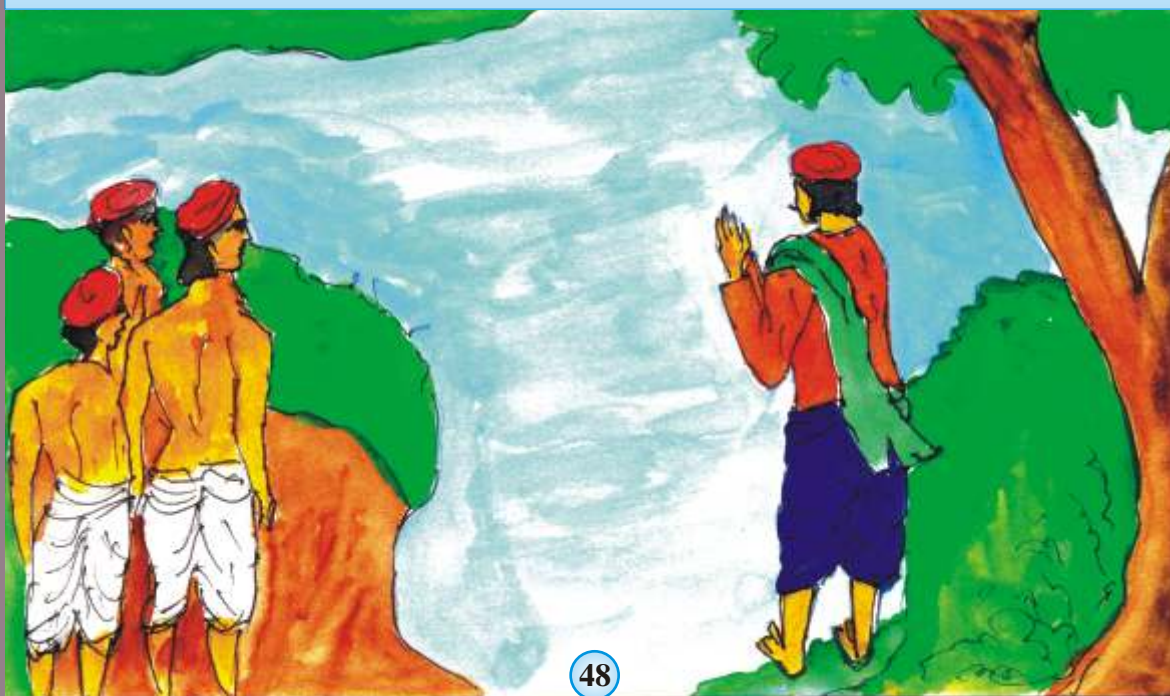
कुलदेवी विश्वेश्वरीकेँ प्रणाम कऽ बिदा भेलाह गंगालाभक लेल। शिवसिंहसँ दूर भेलापर ओ श्रृंगाररस छोड़ि भक्ति काव्यक रचना केनाइ शुरूह कऽ देने रहथि।



गंगासँ दू कोसपर मऊ-बाजितपुरमे ओ ठहरि गेलाह। गंगाक परीक्षण करबाले। साँझ भऽ गेल रहै।



भोर होइत-होइत गंगा मऊ-बाजितपुर आबि गेलीह। लोक सभ चमत्कृत देखैत रहि गेलाह।



गंगातटपर कताक दिन रहि विद्यापति प्राण त्यागलन्हि आ हुनका गंगालाभ भेटलन्हि।



श्रुति प्रकाशनसँ शीघ्र प्रकाश्य

ešFkyh fp=kdFkk

■ ešFkyh fp=kdFkk&uhrw dēkj

txnh'k iā kn e.My

■ dFkk&l xg& xled ftuxh

■ ukVd& feffkykd cšh

■ miU;kl & eškyby xkNd iQy] thou lā'k] thou ej.k] mRFku&iru] ftuxhd thr

■ feffkykd lādkj&of/&0;ogkj xhr vk xhrukn & lādyu meš'k e.My

Xktšnz Bkdjd jpuk l Hk

1- dQ {kske~vUrešd l kr [k.Md ckn xktšnz Bkdjd

dQ {kske~vUrešd&2 [k.M&8 (iāU/&fucU/&l ekykpuk&2)

2- l gL=kck<fud ckn xktšnz Bkdjd nkl j miU;kl l gL=k'kh'kkZ

3- l gL=kCnhd pšM+jd ckn xktšnz Bkdjd nkl j i |&l xg l gL=kftr~

4- xYi xPNd ckn xktšnz Bkdjd nkl j dFkk&xYi l xg 'kCn'kkL=ke-

5- lā'k'kd ckn xktšnz Bkdjd nkl j ukVd mYdkeŋk

6- Ro×pkg×p vk vl×tkfr eud ckn xktšnz Bkdjd rā j xhr&iāU/ ukjk'kā h

7- usk&Hk/dk vk fd'kjd yy xktšnz Bkdjd rhuVk ukVd tyknh

8- usk&Hk/dk vk fd'kjd yy xktšnz Bkdjd i | l xg ckÄd cÄkš

9- usk&Hk/dk vk fd'kjd yy xktšnz Bkdjd f[kLl k&figkuh l xg v{kjeŋ'Vdk

एकैसम शताब्दीक प्रथम दशकक अवसान बेलामे मैथिलीमे एक नवीन शृंखला शुभारंभ भेल जे प्रथमे-प्रथम मैथिली चित्रकथाक प्रकाशनक सूत्रपात श्रुति प्रकाशन कयलक अछि जे एकर आलोकमय भविष्यक सूचक थिक। एकर श्रेय आ प्रेय छनि सुश्री नीतू कुमारीक जे अपन सहज मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित भऽ अपन कल्पना शक्तिक द्वारा मैथिलीक प्राचीन गौरव-गरिमाक आख्यान एकरा माध्यमे व्याख्यायित करबाक उपक्रम कयलनि अछि। हमर व्यक्तिगत इच्छा अछि जे अभिभावक लोकनि अपना नेना-भुटकाकँ मैथिली चित्रकथाक माध्यमे मातृभाषानुरागक बीजवपन करथि। एतदर्थ हमर अशेष शुभांशा-**प्रेमशंकर सिंह**



Jfr iādk'ku

dk; kš; % 8@21] U; w jktšnz uxj] fnYyh&110008

nijHkk'k% (011) 25886656µ58 iāI % (011) 25886657

website: <http://www.shruti-publication.com>

email: shruti.publication@shruti-publication.com

ISBN: 978-93-80538-13-6



Rs. 100/-

US \$80